

विभूतियाँ और आधुनिक पैरासाइकोलॉजी एक तुलनात्मक अध्ययन

दीपिका¹, डॉ. बबलू वेदालंकार²

¹ शोधछात्रा, दर्शनशास्त्र विभाग गुरुकुल काँगड़ी समविश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तर प्रदेश, भारत

² सहायक आचार्य, दर्शनशास्त्र विभाग गुरुकुल काँगड़ी समविश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

आधुनिक युग में मनुष्य की चेतना और मानसिक क्षमताओं की गहराईयों का वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक दोनों दृष्टिकोणों से अध्ययन किया जा रहा है। इस सन्दर्भ में, पैरासाइकोलॉजी (Parapsychology) एक वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में जानी जाती है, जो मानव चेतना की अतिमानवीय क्षमताओं जैसे टेलीपैथी, पूर्वाभास, और मनो-भौतिक अंतःक्रिया की वैज्ञानिक जांच करती है। दूसरी ओर, योग दर्शन में विभूतियाँ या सिद्धियाँ वे विशिष्ट आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं, जो योग साधना के माध्यम से साधक को प्राप्त होती हैं, जैसे अणिमा, महिमा, और वशित्व, जिनका उद्देश्य केवल भौतिक चमत्कार नहीं अपितु आत्मा-अखण्डता और मोक्ष की ओर प्रगति है।

इन दोनों क्षेत्रों अर्थात् आधुनिक पैरासाइकोलॉजी और योग की विभूतियों के बीच संभावित अंतर्संबंधों की खोज एक मानव चेतना और मानसिक क्षमताओं पर होने वाले नए शोधों में नई दृष्टि दे सकता है। पैरासाइकोलॉजी मुख्यतः अनुभवजन्य, प्रयोगात्मक सिद्धांतों और आंकड़ों पर आधारित है, जबकि योगशास्त्र इन शक्तियों को ध्यान और समाधि जैसी गहन आध्यात्मिक प्रथाओं की परिणति मानता है। योगिक विभूतियाँ, जो सदियों से भारतीय धार्मिक-दर्शनशास्त्र में वर्णित हैं, पैरासाइकोलॉजी के विज्ञान की समझ और व्याख्या से सम्बद्ध हो सकती हैं। जिससे योग के सिद्धांत और अभ्यास पर आधारित ये शक्तियाँ पैरासाइकोलॉजी के माध्यम से विज्ञान की को नई दिशा और परिणाम दे सकती हैं।

योगिक सिद्धियाँ और पैरासाइकोलॉजिकल शक्तियाँ मूलतः समान चेतना के विभिन्न पहलू हैं, जिनका अध्ययन मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, और आध्यात्मिक रूप से हो सकता है। साथ ही, आधुनिक विज्ञान की सीमाओं को पहचानते हुए, योग के गूढ़ आध्यात्मिक सिद्धांतों को वैज्ञानिक ढांचे में स्थापित करने के चेतना के रहस्यों की खोज में पूर्व से अनदेखे आयाम खुल सकते हैं।

अतः योग और पैरासाइकोलॉजी में अंतरसम्बन्ध पूर्व और पश्चिम की वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक परंपराओं के समन्वय की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक कदम है, जो मनुष्य की मानसिक और आध्यात्मिक संभावनाओं के समग्र ज्ञान के विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है।

उपर्युक्त दोनों क्षेत्रों के बीच क्या-क्या अंतर-सम्बन्ध हो सकते हैं इसके लिए इन दोनों परम्पराओं को विस्तार से समझना आवश्यक हो जाता है।

मूल शब्द: थर्ड जेंडर, जैविक संरचना, तीसरा मानवीय प्राणी, अस्मिता

योग-क्रिया में संयम से प्राप्त विभूतियों का विश्लेषण

योग-सूत्र के तृतीय पाद को विभूतिपाद एवं भगवद्गीता के दसवें अध्याय को विभूतियोग के नाम से जाना जाता है। गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि जिस मनुष्य ने भी विभूतियों और योगमार्ग से जाना है वह योग-तत्त्वों को जानकार अविचल रूप-युक्त हो जाता है।¹

योग शास्त्र में संयम को योग के अंतिम तीन अंगों – धारणा, ध्यान, और समाधि – का सम्मिलित अभिधान माना गया है। पतंजलि योगसूत्र और उनके व्यास भाष्य में संयम की व्यापक परिभाषा मिलती है, जो योग साधक को स्थूल से लेकर सूक्ष्मतम तत्वों तक की अनुभूति कराती है। संयम की यह प्रक्रिया योगी को न केवल ज्ञानोदय की ओर ले जाती है, बल्कि उसे विभूतियों के माध्यम से आध्यात्मिक शक्तियों की प्राप्ति भी कराती है।

संयम की परिभाषा और स्वरूप

संयम पतंजलि योगसूत्र में धारणा, ध्यान एवं समाधि के एकत्रित रूप के रूप में वर्णित है।² व्यास भाष्य में इसे धारण, ध्यान, समाधि की त्रय की तान्त्रिकी परिभाषा कहा है।³ कहा गया है। इसका अर्थ यह है कि योग साधना में प्रत्येक सिद्धि की प्राप्ति हेतु बार-बार उस विषय से सम्बंधित धारणा, ध्यान और समाधि की आवश्यकता होती है। जब योगी एक समग्र संयम की स्थिति में पहुँचना प्राप्त कर लेता है, तब उसे किसी भी किसी विषय पर चित्त द्वारा उत्कृष्ट स्थिति प्राप्त हो जाती है। इस अवस्था में

योगी को क्रमशः धारणा, ध्यान, समाधि का पालन करना आवश्यक नहीं रहता; उसके मन-स्थित संयम के द्वारा वह तत्काल सिद्धि अनुभव कर सकता है।

धारणा, ध्यान और समाधि को पृथक् रूप में समझना आवश्यक है। हालांकि समाधि में धारणा और ध्यान सम्मिलित रहते हैं, पर संयम की परिभाषा मात्र किसी एक पक्ष की समाधि तक सीमित नहीं है। संयम का आशय है विषय के सम्यक ज्ञान के लिए विभिन्न अवस्थाओं में बार-बार धारणा, ध्यान, एवं समाधि लगाना। यह एक गहन अभ्यास है जिससे योगी विषय की विभिन्न दशाओं को आत्मसात कर अपने नियंत्रण में कर लेता है।

संयम तीन प्रकार की धारणा करता है – तत्त्वज्ञानमय (सौख्य आधारित) और वैषयिक धारणा। तत्त्वज्ञानमय धारणा में योगी इन्द्रिय अभिमान को लक्ष्य कर ज्ञानयोग के प्रथम साधन के रूप में चित्त की चंचलता को दमन करता है तथा व्यावहारिक "मैं पन" की प्रतिसंवेदना का विवेचन भी करता है। वैषयिक धारणा में शब्द और ज्योति की आध्यात्मिक धारणा प्रमुख होती है। योगी इन धारणाओं के माध्यम से अनाहत नाद, मार्गधारणा एवं विभिन्न चक्रों की क्रिया में संलग्न होकर सूक्ष्म लोकों का अनुभव प्राप्त करता है।⁴

धारणा से ध्यान की ओर तथा ध्यान से समाधि की उत्कृष्ट स्थिति स्वतः उत्पन्न हो जाती है। अतः संयम की त्रयी योग के अन्तिम तीन अंग हैं, जो चित्त-निरोध के यात्रापथ का सार हैं। इसी चित्त-निरोध से योग की विभूतियाँ प्राप्त होती हैं।

संयम से प्रज्ञा का उदय

संयम के परिपक्व हो जाने पर समाधि-जन्य प्रज्ञा का प्रकाश उत्पन्न होता है। जैसे-जैसे संयम स्थिर एवं सशक्त होता है, योगी की प्रज्ञा उत्तरोत्तर निर्मल, शुद्ध और व्यापक होती जाती है। प्रारम्भ में साधक के लिए वस्तुओं का प्रायोगिक ज्ञान होता है, किन्तु अभ्यास के साथ वह स्थूल से सूक्ष्म तत्वों के गहन अनुभव में सक्षम हो जाता है। प्रज्ञा के इस आलोक में योगी वस्तुओं के स्वरूपों का स्पष्ट साक्षात्कार करता है और अंततः तत्त्वदृष्टि प्राप्त हो जाती है।¹⁵

संयम की साधना चरणबद्ध रूप में स्थूल, स्वरूप, सूक्ष्म, अन्वय और अर्थवत्त्व के भूमि-सोपानों में होनी चाहिए। क्षणतः क्रम से युक्त विभेदन एक प्रकार का बुद्धि-समाहार होता है, जो साधक को सहज विवेकजाति ज्ञान प्रदान करता है। योगी के लिए यह अनिवार्य है कि वह निम्न भूमि को बिना जीते उच्च भूमि की ओर न बढ़े क्योंकि पूर्वभूमि की प्रज्ञा के बिना उच्चतम समाधि संभव नहीं है।¹⁶

विभूतियों का स्वरूप और विवेचन

योग में 'विभूति' शब्द का अर्थ है कोई भी विशेष सामर्थ्य या सिद्धि जिसे योगी संयम के माध्यम से प्राप्त करता है। योग सूत्र के तृतीय पाद को ही विभूतिपाद कहा गया है क्योंकि इसमें अनेक आध्यात्मिक एवं दिव्य शक्तियों का वर्णन है।

विभूतियाँ दो प्रकार की होती हैं:

- 1. बहिरंग साधन-साध्य विभूतियाँ:** ये वे विभूतियाँ हैं जो शरीर, इन्द्रियों, और बाह्य जगत से सम्बन्धित होती हैं। उदाहरण स्वरूप, आयु वृद्धि, इन्द्रिय जय (इन्द्रियों पर विजय), प्राणायाम से प्राप्त शक्ति, आकाश में विचरण, जल, अग्नि, वायु आदि तत्वों पर नियंत्रण आदि।
- 2. अन्तरंग साधन-साध्य विभूतियाँ:** ये चित्त और प्रज्ञा से सम्बन्धित होती हैं, जिनका साक्षात्कार धारणा, ध्यान एवं समाधि के संयम के क्रमानुसार अभ्यास से होता है। इनमें अतीत-भविष्य ज्ञान, भुवनज्ञान, संस्कारज्ञान, पुरुष तत्व का परिज्ञान, आत्मा की विशेष अनुभूति आदि सम्मिलित हैं।¹⁷

संयम के द्वारा योगी इन विभूतियों को प्राप्त करता है परंतु ये विभूतियाँ अंततः साधना का माध्यम हैं, लक्ष्य नहीं। आत्मा की मुक्ति के पथ में विभूतियों में आसक्ति योगी को भ्रमित कर सकती है, अतः पुरुषार्थ यह है कि योगी अंतिम लक्ष्य कैवल्य की ओर - ढ बना रहे।

योग सूत्र एवं व्यास भाष्य के अनुसार संयम कर प्राप्त विभूतियाँ

संयम के माध्यम से योगी को अनेक दिव्य शक्तियाँ प्राप्त होती हैं जो उसको प्रकृति के अन्दर एवं परे की वास्तविकताओं का ज्ञान कराती हैं। कुछ विशेष सिद्धियाँ निम्नलिखित हैं -

- 1. भूत और भविष्य का ज्ञान:** संयम के तीन प्रकार के परिणामों (कर्म, लक्षण, अवस्था) के अभ्यास से योगी को भूतकाल और भविष्यकाल का ज्ञान प्राप्त होता है। शब्द और अर्थ के ज्ञान में भी संयम के द्वारा सब भूतों का ज्ञान संभव होता है।¹⁸
- 2. शरीर विज्ञान का ज्ञान:** नाभि चक्र में संयम करने पर शरीर के वात, पित्त, कफ दोष और उसके कारण उत्पन्न रोगों का साक्षात्कार योगी को होता है। उपनिषदों में वर्णित 72 करोड़ कोशिकाओं की सटीक क्षमता का अनुभूतप्राय ज्ञान योगी को मिल जाता है।¹⁹
- 3. इन्द्रिय जय और ध्यानधारणा:** इन्द्रिय संयम से योगी को अपनी इन्द्रियाँ पर पूर्ण अधिकार मिलता है, जिससे वह इन्द्रियों के मध्यस्थता के बिना भी ज्ञान प्राप्त कर सकता है।¹⁰

4. प्राणों पर नियंत्रण: पंचप्राण (प्राण, अपान, व्यान, उदान, संमान) में संयम योगी को पाँच प्रकार की लोकगमन शक्तियाँ प्रदान करता है। उदान प्राण के संयम से जल और कीचड़ से भय नहीं रहता तथा भूमि या जल पर चलने का सामर्थ्य मिलता है।¹¹

5. सूक्ष्म शक्ति और अणिमादि सिद्धि: योगी अपनी इच्छा से अणु जैसा सूक्ष्म होकर कहीं भी छिप सकता है। उसकी शक्ति इतनी होती है कि वह चंद्रमा का स्पर्श भी कर सकता है। वह अग्नि के ताप या जल की स्नेहता से परे हो जाता है।¹²

6. मन्त्र शक्ति और अन्तर नाद: योगी नाद ध्यान द्वारा अन्तर नाद का अनुभव करता है, जो अन्तरध्यान की अवस्था होती है। इससे योगी कर्ण शक्तियों से परे अपने चित्त को नियंत्रण में ले आता है।¹³

7. चित्त का प्रसार और पारदर्शिता: संयम से योगी अपने चित्त को वशीकार कर दूसरे के चित्त की मानसिक स्थिति जान सकता है, जैसे सारीकी या मधुमक्खी का समूह अपनी रानी का अनुसरण करता है।¹⁴

8. शरीर से बाह्य स्थितियाँ: योगी अपनी चित्त वृत्ति से अपने शरीर के बाहर अन्य शरीरों में प्रविष्ट होकर कार्य कर सकता है।¹⁵

9. लोकांतर ज्ञान: सूर्य, चन्द्र, नाभि, हृदय, तथा अन्य चक्रों में संयम योगी को ब्रह्माण्ड के विभिन्न लोकों का, तारा मण्डल, ग्रह-नक्षत्र व आकाशगंगाओं का, तथा उनके विज्ञान का ज्ञान बनाता है।¹⁶

10. पुरुष तत्व और स्वमिति: योगी संयम के उच्चतम स्तर पर पुरुष तत्व की प्राप्ति करता है जहाँ वह अपने वास्तविक स्वरूप को समझ जाता है और सभी क्लेशों का नाश हो जाता है।¹⁷

विभूतियों की दुष्परिणाम और सावधानियाँ

योग में विभूतियाँ साधना की मध्यम अवस्थाएं हैं, परन्तु उनका मोह साधक को योग मार्ग से भटका सकता है। योगी को यह अवगाहन होना चाहिए कि सिद्धियों के पीछे लिप्ट रहना मोह का कारण है और ये भौतिक संसार की वैराग्यहीनता को जन्म देते हैं। पतंजलि भाष्य में वर्णित है कि ईश्वर की परीक्षा के रूप में देवताओं के द्वारा योगी को विभूतियुक्त करने का विधान है ताकि उस पर असली ईश्वरत्व की छान-बीन की जा सके।

विभूतियों में आसक्त योगी स्थूल लाभ में रम जाता है, जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति के पथ में बाधक है। अतः साधक को संयम की पूर्ण दृढ़ता के साथ सहयोग करते हुए उपरोक्त अवस्थाओं को पार कर कैवल्य की प्राप्ति हेतु अग्रसर होना चाहिए।

अतः योग में संयम का अभ्यास योगी को सूक्ष्म एवं स्थूल दोनों रूपों में विभूतियाँ प्रदान करता है, जो योग साधना के मध्यवर्ती फल हैं। संयम के माध्यम से प्राप्त यह विभूतियाँ योगी को न केवल बाह्य जगत् और आत्मा के रहस्यों का ज्ञान कराती हैं, बल्कि उसे सही मार्ग दिखाती हैं। किन्तु योग का परम लक्ष्य केवल कैवल्य ही है, अतः विभूतियों में आसक्ति योगी के लिए भ्रम है। पतंजलि योगसूत्र और उनके भाष्य के सन्दर्भ में यह निष्कर्ष स्पष्ट है कि संयम के अनुप्रयोग से ही ज्ञान, शक्ति और मुक्ति की प्राप्ति संभव है। योगी को सतत अभ्यास और ईश्वर की कृपा से ही सर्वोच्च समाधि और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

आधुनिक पैरासाइकोलॉजी का स्वरूप एवं अर्थ

पैरासाइकोलॉजी एक ऐसा क्षेत्र है जो पारंपरिक मनोविज्ञान से परे मानव चेतना, मानसिक प्रक्रियाओं और विशेष अनुभवों की वैज्ञानिक जांच करता है। आधुनिक पैरासाइकोलॉजी ने प्रमुखता पाई है क्योंकि यह मनुष्य के अज्ञात मानसिक तथा अलौकिक पक्षों का अध्ययन करता है, जिससे विज्ञान और आध्यात्म के बीच एक सेतु बनता है।

आधुनिक पैरासाइकोलॉजी का अर्थ

पैरासाइकोलॉजी (Parapsychology) शब्द श्पैराइ अर्थात् श्परइ और 'साइकोलॉजी' अर्थात् 'मनोविज्ञान' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ मनोविज्ञान के अतिरिक्त ऐसे मानसिक तथा अनुभवात्मक पक्षों का वैज्ञानिक अध्ययन है जो पारंपरिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों से परे हैं। यह क्षेत्र अज्ञात मानसिक शक्तियों, जागरूकता की अलौकिक अवस्थाओं, और सामान्य चेतना से परे अनुभवों की व्याख्या करने का प्रयास करता है।

यह अध्ययन उन घटनाओं का वैज्ञानिक विवेचन करता है जिन्हें अतीन्द्रिय, मानसिक दूरदर्शन, टेलीपैथी, मानसिक प्रभाव (माइंड इफेक्ट), और पुनर्जन्म, योग सिद्धियां जैसे क्षेत्र भी शामिल हैं। आधुनिक पैरासाइकोलॉजी मनुष्य के अन्दर छिपी अद्भुत मानसिक क्षमताओं या शक्तियों को समझकर उनके व्यवहारिक और चिकित्सीय उपयोग की खोज करता है।

कार्यक्षेत्र

आधुनिक पैरासाइकोलॉजी का कार्यक्षेत्र व्यापक है, इसमें निम्नलिखित प्रमुख पक्ष आते हैं

- 1. अतीन्द्रिय संचार (ESP)** – अतीन्द्रिय संचार वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति बिना किसी भौतिक माध्यम के दूसरे व्यक्ति की मानसिक स्थिति, विचार, भावना, या वस्तुनिष्ठ सूचना प्राप्त कर सकता है। टेलीपैथी, क्लैरवॉयसंस (अस्पष्ट दृष्टि), और पूर्वज्ञान जैसी क्षमताएं ESP का हिस्सा हैं।
- 2. मनो दृ भौतिक प्रभाव (Psychokinesis)** – मनो-भौतिक प्रभाव का अध्ययन यह देखता है कि कैसे मानसिक क्रियाएँ भौतिक वस्तुओं या पर्यावरण को प्रभावित कर सकती हैं, जैसे वस्तु को बिना स्पर्श किए हिलाना या किसी ऊर्जा क्षेत्र को नियंत्रित करना।
- 3. जीवितों और मृतकों के बीच संवाद** – यह क्षेत्र मृत्यु के पश्चात भी चेतना के अस्तित्व की संभावना और उनसे संवाद की संभावनाओं की वैज्ञानिक खोज करता है, जो सेशन माध्यम, थॉट फील्ड थेरेपी आदि से सम्बन्धित है।
- 4. पूर्वलक्षण और पुनर्जन्म की घटनाएं** – पूर्वलक्षण (Precognition) और पुनर्जन्म (Reincarnation) जैसी अवधारणाओं का आधुनिक वैज्ञानिक और तथ्यात्मक आधार तलाशना, जैसे बच्चों में पुराने जीवन के अनुभवों का पुनरावर्तन।
- 5. स्वप्नों और ध्यान की भूमिका** – मानसिक चेतना के सूक्ष्मतरंग स्तरों को समझने के लिए योग, ध्यान, और स्वप्नों का शोध। इनके माध्यम से मानसिक विकारों का उपचार और मानसिक शांति की प्राप्ति।
- 6. प्रायोगिक शोध एवं उपकरण** – आधुनिक पैरासाइकोलॉजी में प्रयोगशालाओं में विशेष उपकरणों का उपयोग कर, जैसे म्ळ (इलेक्ट्रोएन्सेफलोग्राफी), फलीक्सोलॉजी, और अन्य ऊर्जा क्षेत्र मापन तकनीकों के द्वारा मानसिक व पारामानविक शक्तियों का अध्ययन।

उपर्युक्त मानव चेतना की दोनों शाखाओं से यह स्पष्ट है कि योग दर्शन में विभूतियाँ आध्यात्मिक साधना और समाधि से प्राप्त ऐसी दिव्य शक्तियाँ हैं जो मनोविज्ञान के अलौकिक आयामों से संबंधित हैं। आधुनिक पैरासाइकोलॉजी भी चेतना के ऐसे पहलुओं का वैज्ञानिक शोध है लेकिन यह ज्यादा प्रयोगात्मक और बाह्य मानसिक प्रभावों की खोज में लगा है। दोनों ही अध्ययन मानव चेतना के विकास, उसकी सीमाओं और संभावनाओं को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। दोनों के उद्देश्य भले भिन्न हों पर दोनों मानव चेतना की गहन समझ हेतु सहायक हैं। यदि दोनों का साथ-साथ अध्ययन किया जाए तो योग दर्शन में वर्णित विभूतियों एवं सिद्धियों को आधुनिक आधुनिक पैरासाइकोलॉजी में प्रयोगात्मक अध्ययन के रूप में सम्मिलित कर लिए जाए तब यह इस क्षेत्र में मील का पत्थर सिद्ध हो सकता है। आधुनिक पैरासाइकोलॉजी में योग की विभूतियाँ प्रभावी कैसे हो सकती हैं, इस विषय पर स्पष्टता से समझने के लिए निम्न बिंदुओं में व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है –

1. चेतना के सूक्ष्म आयामों का वैज्ञानिक अध्ययन

योग में वर्णित विभूतियाँ, जैसे कि धारणा, ध्यान और समाधि के माध्यम से प्राप्त प्रज्ञा, सूक्ष्म चेतना तथा मानसिक शक्तियाँ, आधुनिक पैरासाइकोलॉजी के अध्ययनों के लिए मूलभूत आधार प्रदान कर सकती हैं। योग सूत्रों में संयम के माध्यम से प्राप्त "परिणाम-त्रय संयमदतीतानागतज्ञान" जैसी प्रज्ञाएं, पैरासाइकोलॉजी के ESP, माइंड इफेक्ट जैसे विषयों की समझ में विस्तार कर सकती हैं। ये योग की सूक्ष्म मानसिक अवस्थाएँ आधुनिक प्रयोगशाला उपकरणों (जैसे EEG) द्वारा मापी जा सकती हैं, और पैरासाइकोलॉजी के सिद्धांतों के साथ उनका सामंजस्य स्थापित हो सकता है।

2. मानसिक नियंत्रण और ऊर्जा प्रबंधन

योग के नाभि चक्र, प्राणों (प्राण, अपान, उदान) के संयम से प्राप्त शक्तियाँ, जैसे कि "जल, कीचड़, कंटक आदि से भय न होना", आधुनिक मानसिक ऊर्जा प्रबंधन और मनोवैज्ञानिक उपचार पद्धतियों में उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। पैरासाइकोलॉजी में मानसिक-भौतिक प्रभाव (Psychokinesis) की अवधारणा योग की ऊर्जा शक्तियों से मिलती जुलती है, जिससे मन से भौतिक क्रियाओं को संचालित करने की क्षमता का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

3. मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य में योगदान

योग के संयम और ध्यान की विधियाँ पैरासाइकोलॉजी की उपचारात्मक तकनीकों के साथ एकीकृत होकर मानसिक विकार, तनाव, और भावनात्मक असंतुलन के उपचार में प्रभावशाली संसाधन बन सकती हैं। जैसे व्यास मुनि ने बताया कि "संयम से प्रज्ञा का आलोक प्राप्त होता है" और "विषय-संदर्भ में चित्त का नियंत्रण" मानसिक संतुलन और जीवन की गहन समझ को बढ़ावा देता है, जो मनोवैज्ञानिक चिकित्सा में सहायक है।

4. पुनर्जन्म और पूर्वज्ञान के अध्ययन में सहायक

योग के अतीत-भविष्य ज्ञान (पूर्वजातिज्ञान, अतीत अनागत का ज्ञान), ब्रह्मलोक-दर्शन आदि योगी विभूतियाँ, पैरासाइकोलॉजी के पुनर्जन्म, स्वप्नों के माध्यम से भविष्य-सूचना जैसे विषयों की स्पष्टीकरण के लिए संदर्भ प्रदान कर सकती हैं। "संयम कर योगी को भूतकाल और भविष्यकाल का ज्ञान प्राप्त होता है", जो आधुनिक चेतना शोध के लिए संदर्भ-स्रोत के रूप में काम कर सकता है।

5. चेतना के प्रसार और टेलीपैथी के वैज्ञानिक आधार

योगी के "चित्त प्रसार द्वारा दूसरे के चित्त में प्रवेश" की विभूति आधुनिक पैरासाइकोलॉजी में टेलीपैथी और मानसिक संचार के अध्ययन के लिए आधारशिला हो सकती है। ये अनुभव आधुनिक न्यूरोसाइंस के स्वरूपों के साथ मिलकर चेतना के विस्तारित मॉडल विकसित करने में सहायक हो सकते हैं।

6. अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय

योग की विभूतियाँ, जब वैज्ञानिक रीति से परखकर आधुनिक उपकरणों और पद्धतियों के साथ अध्ययन की जाएं, तो वे पैरासाइकोलॉजी को आध्यात्मिक-वैज्ञानिक पुल प्रदान कर सकती हैं। जैसा कि गीता के नवम अध्याय में कहा गया है, "अनन्याशिचन्तयन्तो मां", ईश्वर की कृपा से योग की शक्तियाँ सहज कार्य करती हैं, यह आधुनिक शोध के लिए प्रेरणा और समर्थन देती है।

निष्कर्ष

योग की विभूतियाँ आधुनिक पैरासाइकोलॉजी के लिए प्रभावी संसाधन हो सकती हैं, क्योंकि वे चेतना के सूक्ष्म और व्यापक आयामों को समझने, मानसिक नियंत्रण विकसित करने, और आध्यात्मिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में सहायक हैं। परंपरागत योग पद्धतियों के भीतर निहित गहन मानसिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान, वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से प्रमाणित होकर पैरासाइकोलॉजी के क्षेत्र को मजबूत और समृद्ध कर सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः । सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥ भगवद्गीता – 10/7
2. त्रयमेकत्रसंयमः योऽसू० 3-4
3. तदस्य त्रयस्य तान्त्रिकी परिभाषा संयम इति
4. "महीं मूलाघारे कमपि मणिपूरे हुतवहं" स्थितं स्वाधिष्ठाने दिमरुतमाकाशमुपरि । मनोऽपिभूमव्ये सकलमपि भित्वा कुलपयं सहसारे पद्मे सहरहसि पत्या विहरसे (सौन्दर्य लहरी)
5. तदपि वहिरंगं निर्वाजस्य – योऽसू० 3-8
6. तजयात्प्रज्ञालोक – योगऽसू० 3/5
7. शब्दार्थप्रत्ययानामितरेतराध्यासात्संकरस्तत्प्रविभाग संयमात्सत्र भूतरुतज्ञानम् । यो० 3/17
8. शब्दोऽन्यथाऽथोन्यथा प्रत्यय इति विभागः एवं तत्प्रविभाग संयमाद् योगिनः सर्वभूतरुतज्ञानं सम्पद्यत इति । (व्यास भाष्य)
9. कायव्यूहं विजानीयाद् वातपिनश्लेष्माणस्त्रयो दोषाः सन्ति ॥ (व्यास भाष्य)
10. तत्सालम्बनं तस्याविषयी भूतत्त्वाद् । यो० सू० 3/20
11. स्थूलस्वरूप सूक्ष्मान्वयार्थ वत्त्वसंयमाद् भूतजयः ॥ योऽसू० 3/44
12. ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसम्पत्तद्धर्मानाभिघातश्च ॥ योऽसू० 3/45
13. कायरूपसंयमात् तद्ग्राह्यशक्तिस्तम्भे चक्षुः प्रकाशासम्प्रयोगेऽन्तर्द्धानम् । योऽसू० 3/21
14. प्रत्ययस्य परत्तिज्ञानम् यो० सू० 3/19
15. उदानजयाज्जलपंकण्टकादिष्वसंग उत्क्रान्तिश्च ॥ योऽसू० 3/39
16. नाभिचक्र कायव्यूहज्ञानम् ॥ योऽसू० 3/29
17. बहिरकल्पिता वृत्तिम । हाविदेहा ततः प्रकाशावरणक्षयः ॥ योऽसू० 3/43